State PCS Success Program (SPS)

UPPSC (Mains) - 2022

General Hindi - Solution

Instruction to Students

Answers provided in this booklet exceed the word limit so as to also act as source of good notes on the topic.

Candidates must focus on the keywords mentioned in the answers and build answers around them. Elaborate answers are given with the purpose that candidates understand the topic better.

We have also adopted a grey box approach to provide context wherever necessary, which is not to be considered a part of the answer.

For any feedback please write to us at helpdesk@forumias.academy

प्रश्न 1 - यदि मनुष्य को धर्म मार्ग पर आना है तो उसे इन्द्रिय-निग्रह करना ही होगा,क्यूंकि इन्द्रियों से भिन्न मनुष्य कुछ है ही नही। इन्द्रियाँ खुल कर हरियाली चरती फिरें और मनुष्य का मन धर्म के मार्ग पर आरूढ़ रहे यह कल्पना ही परस्पर विरोधी है।या तो वह इन्द्रियो की दास्ताँ स्वीकार कर ले और जिधर-जिधर इन्द्रियाँ जाने को कहें उधर-उधर भागता फिरे। अथवा इन्द्रियों को वश में लाकर वह धर्म के पालन में तत्पर हो। इन्द्रियों की उल्लंघनता पशु-धर्म है और जो भी व्यक्ति इन्द्रियों को अनियंत्रित रखने का पक्षपाती है उसे यह भी मानना चाहिए कि मनुष्य पशु से भिन्न नही है । किन्तु जो लोग यह मानते है की मनुष्य पशु से भिन्न प्राणी है,उन्हें इन्द्रिय-निग्रह को माने बिना चारा नही है,क्योंकि इन्द्रियों को नियंत्रण में रखकर ही मनुष्य पशुता से दूर जा सकता है। इन्द्रियों का उद्दाम नृत्य पशुता का प्रमाण है। इन्द्रियों को घाट में बाँधकर चलना ही मनुष्यता है मनुष्य की संस्कृति है।

(क) उपर्युक्त गघ का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

धर्म सद्वृत्तियों की धारणा की अभिव्यक्ति है। इसके लिए इन्द्रिय निग्रह पर विशेष बल देने की आवश्यकता है। इन्द्रियों का स्वछंद हो भौतिक संसार में विचरण धर्म के बीच अवरोध का महत्वपूर्ण कारण है। धर्म आभ्यंतर वृत्ति का द्योतक है और इन्द्रियाँ वही वृत्ति का। अतः इन्द्रियों पर नियंत्रण ही मन को नियंत्रित करता है तभी हम धर्म में सही ढंग से प्रवृत्त हो सकते हैं। इन्द्रियों का स्वछंद विचरण पशुवृत्ति का द्योतक है। पशु और मानव ,में यही अंतर है। वे इन्द्रियों के पूर्णतः अधीन होते हैं और मनुष्य में विवेक की वृत्ति के कारण औचित्य का सम्यक बोध होता है। यदि मनुष्य ने इन्द्रिय निग्रह नहीं अपनाया तो वह भी पशु की ही कोटि में आ जाएगा

(ख) उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर धर्म और इन्द्रियनिग्रह के अन्तः सम्बन्ध की विवेचना कीजिए।

धर्म हमारी अन्तः वृत्ति का द्योतक है। इसकी हमारी जीवन में पूर्ण सफलता निश्चय ही इन्द्रिय नियंत्रण पर अवलम्बित है। बिना इन्द्रिय निग्रह के धर्म मात्र एक दिखावा है। हमारी इन्द्रियाँ जगत में विचरती रहे तो हम केवल बाह्याडम्बर करते हुए बालू के ढेर पर बैठे हुए होंगे। इन्द्रिय निग्रह के ही माध्यम से हम अपनी अंतश्चेतना को जागृत कर उस संसार में पहुँचते हैं जहां सद्वृत्तियों का मनोरम संसार होता है। वहीं से सच्चे धर्म की अभिव्यक्ति होती है। मानव जीवन की सफलता भी यही है।

(ग) उपर्युक्त गद्यांश के रेखांकित अंशो की व्याख्या कीजिए।

(i) जीव पांच इन्द्रियों का ही मिला जुला रूप है। इन इन्द्रियों का मानव जीवन में विशेष महत्त्व है। किन्तु इन पर नियंत्रण भी आवश्यक है। धर्म पथ पर हम तभी आगे बढ़ पाएंगे जब हम स्वनियंत्रित रहे। बिना इसके धर्म की कल्पना भी नहीं की जा सकती है क्यूंकि धर्म आभ्यंतर वृत्ति का द्योतक है

(ii)मनुष्य और पशु में यही अंतर है की मनुष्य में विवेक होता है। उसे उचित और अनुचित का भान होता है। जबकि पशु इससे विरत होता है। अतः मनुष्य इसी के तहत इन्द्रिय निग्रह कर धर्म पथ का वरण करता है वहीं दूसरी तरफ इसका उल्लंघन ही पशुवृत्ति का द्योतक है

(iii)इन्द्रियों का स्वच्छंद विचरण हमारी विवेक शून्यता का प्रमाण है। इन्द्रियाँ हमारी दास रहे तो यह हमारी सद्वृत्ति को दर्शाता है वहीं अगर हम इन्द्रियों के दास रहे तो यह हमारे अविवेक का परिचायक है। इन्द्रियों को स्वनियंत्रित करके जीवन को सन्मार्ग पर प्रवृत्त करना ही मनुष्यता है, यही हमारा धर्म और संस्कृति है।

प्रश्न 2 - हिन्दी और अंग्रेजी इन दोनों भाषाओं का भारत के हिन्दी प्रदेशों के शिक्षित क्षेत्रो में खूब उपयोग होता है। पढ़े लिखे लोग अधिकांश औपचारिक क्षेत्रों में अंग्रेजी का इस्तेमाल करते है। और अनौपचारिक क्षेत्रों में हिन्दी अंग्रेजी दोनों का। भारत में अनेक संदर्भो में अंग्रेजी का प्रयोग सहज और स्वाभाविक माना जाने लगा है। जो व्यक्ति हिन्दी का प्रयोग बहुलता से करता है उसे या तो देशभक्त या नेता समझा जाता है। भाषा दुवेत की स्थिति में फँसा पढ़ा लिखा हिन्दी भाषी अनौपचारिक सन्दर्भो में हिन्दी-अंग्रेजी और स्थानीय बोलियों का मिला-जुला रूप प्रयोग में लाता है। औपचारिक भाषा में बोलने या लिखने का अवसर आने पर हिन्दी भाषियों की कठिनाई बहुत बढ़ जाती है और अपनी ही भाषा से उनका नाता ढीला पड़ने लगता है। अंग्रेजी समझने या उसमें अभिव्यक्त करने की उनकी गति एवं स्तर उतना प्रभावी नही होता जितना अपनी मातृभाषा में हो सकता है। स्थिति कुछ ऐसी बनती जा रही है कि आज हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में ही भाषियों का स्तर कमा चलाऊ-सा होता जा रहा है। न तो अंग्रेजी के बोलने या लिखने में प्रामणिकता और प्रांजलता है और न ही हिन्दी में।इस प्रकार' इतो नष्टः ततो भ्रष्टः' वाली कहावत चरितार्थ होती दिखाई देती है।

(क) ऊपर लिखे गये गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।

हिंदी बनाम आंग्लभाषा

(ख) संक्षेपण एवं भावार्थ में क्या अन्तर है?

संक्षेपण और भावार्थ दोनों में ही मूल अवतरण के भावों अथवा विचारों को संक्षिप्त रूप में ग्रहण किया जाता है। लेकिन भावार्थ में लेखन की कोई सीमा नहीं बाँधी जा सकती जबकि संक्षेपण में यह आवश्यक है की वह सामान्यतया मूल का एक तिहाई हो। साथ ही भावार्थ में मूल अवतरण के मूल एवं गौड़ भावों को स्थान दिया जाता है लेकिन संक्षेपण में केवल मूल भाव ही ग्रहण किया जाता है।

(ग) उपर्युक्त अवतरण का संक्षेपण लिखिए।

वस्तुतः हिंदी हमारी मातृभाषा है। अपनी मातृभाषा में अभिव्यक्ति की गति और स्तर देखते ही बनता है लेकिन औपचारिक क्षेत्रों में बहुतायत पढ़े लिखे लोग आंग्लभाषा का ही प्रयोग करते हैं। उसमे उनकी अपनी श्रेष्ठता का प्रभाव दिखता नज़र आता है। अद्यतन हिंदी भाषा का प्रयोग करने वाला व्यक्ति सामान्य स्तर का माना जाता है। निश्चय भाषा आज दुविधा में फंस गयी है जहां दोनों का मिश्रित रूप ही निर्दिष्ट होता है। अंग्रेज़ी भाषा के प्रभाव में हिंदी भाषियों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। द्वैत में फंसी भाषा जन्य समस्या लोगों के लिए समस्या बंटी जा रही है ऐसे में हम न तो अंग्रेज़ी से ढंग से रूबरू हो पा रहे हैं न ही हिंदी को सही ढंग से अंगीकार कर पा रहे हैं। ऐसी स्थिति में यहाँ नष्ट तो वहां भ्रष्ट वाली कहावत चरितार्थ होती दिख रही है।

प्रश्न 3 -(क) सरकारी एवं अर्ध्द - सरकारी पत्र का अन्तर स्पष्ट करते हुए अर्ध्द - सरकारी पत्र का एक उदाहरण प्रस्तुत कीजिए।

सरकारी पत्र - सरकार के कामकाज से संबंधित पत्र सरकारी पत्र या शासकीय पत्र (Official Letter) कहलाते हैं। इनका प्रयोग सरकारी विभागों/कार्यालयों द्वारा किया जाता है। सरकार के कामकाज के संबंध में अनेक तरह के पत्राचार किए जाते हैं इस प्रक्रिया में सबसे अधिक प्रयोग सरकारी पत्रों का होता है। इनका एक निश्चित प्रारूप और शैली होती है उसी के अनुसार यह लिखे जाते हैं। इन्हें लिखते समय मौलिक प्रयोग नहीं किया जा सकता। ऐसा नहीं है कि एक प्रदेश सरकार एक तरह से लेखन करेगी और दूसरे प्रदेश की सरकार दूसरे तरह की लिखेगी यदि मौलिक प्रयोग करते हुए इन्हें लिखा जाता है, तो यह गलत या अनियमित होगा।

अर्द्ध-सरकारी पत्र- अर्द्धसरकारी पत्र का प्रयोग विभिन्न सरकारी अधिकारियों के बीच होता है। यह किसी भी अधिकारी के पास उसके व्यक्तिगत नाम से भेजा जाता है। गैर-सरकारी व्यक्तियों (non officials) के पास भेजे जाने पर उसे सरकारी पत्र नहीं कहा जायेगा। इस प्रकार के पत्र का मूल उद्देश्य अधिकारियों की व्यक्तिगत सम्मति जानना या किसी विषय की जानकारी या सूचना पाना या किसी विचार-विमर्श का आदान-प्रदान होता है। इसमें किसी अधिकारी का व्यक्तिगत ध्यान किसी खास मामने की ओर आकृष्ट किया जाता है, जिसकी कार्यान्विति में विलम्ब हो गया हो या अनुस्मारक (reminder) भेजने पर भी उचित उत्तर समय पर नहीं मिला हो।

अ० स० संख्या फ० 126/06/2022
भारत सरकार
गृह मन्त्रालय, नई दिल्ली
दिनांक .....

प्रिय .....,
अपके पत्र, संख्या फ० 5/8/20 दिनांक 6 अप्रैल, 2019 ई. के उत्तर में मैं आपके सम्मुख दो सुझाव प्रस्तुत करता हूँ

1. अब हिन्दी कक्षाओं का प्रारम्भ हुए छह महीने हो चुके हैं और इन कक्षाओं के लिए नियत पाठ्यक्रम लगभग समाप्त हो चुका है। अतः अगले महीने के आरम्भ में परीक्षाएँ लेने का प्रबन्ध किया जाय।

2. हिन्दी पढ़ने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण होने वाले कर्मचारियों को नकद पुरस्कार देने की व्यवस्था की जाय। इस वाक्य पर विचार करने के लिए मई, 1110 ई. को सम्पर्क अफसरों की एक सभा मेरे कमरे (क्रमांक 78, साउथ ब्लॉक) में ठीक चार बजे सायंकाल होगी। आपसे अनुरोध है कि आप उसमें उपस्थित होकर अपने विचार प्रस्तुत करें।

आपका सद्भावी,
रामनरेश

श्री .....
उपसचिव, शिक्षा मन्त्रालय,
नई दिल्ली।

(ख) परिपत्र एव अधिसूचना में अंतर बताते हुए परिपत्र का एक प्रारूप प्रस्तुत कीजिए।

परिपत्र

एक मंत्रालय या एक विभाग के अंदर, एक कानून के कुछ पहलू को समझाने के लिए परिपत्र का उपयोग किया जाता है कभी-कभी यह देखा जाता है कि पिछले एक में शेष बिंदु को स्पष्ट करने के लिए एक और परिपत्र जारी किया जा सकता है। अन्यथा, स्थिति को सुधारने के लिए एक विधायी संशोधन किया जाता है। मंत्रालय के कर्मचारियों को इस तरीके से किसी भी कानून या कानून का एक हिस्सा समझाया गया है। संदेह को स्पष्ट करने के लिए इसका प्रशासनिक दिशानिर्देश अधिक है। व्याख्यात्मक और प्रकृति में व्याख्यात्मक, परिपत्रों को आयकर विभाग में उच्च स्तर के कार्यकारी द्वारा जारी किया जाता है। वे अक्सर विभाग द्वारा दिए गए छूट को ध्यान में लाते हैं। एक परिपत्र विभाग के अधिकारियों पर ही बंधनकारी है और निर्धारिती पर नहीं।

अधिसूचना

अधिसूचना सिर्फ एक अधिनियम के तहत महत्व है और एक परिपत्र से अधिक बाध्यकारी है चाहे वह एक निर्धारिती, अदालतों या अधिकारियों, सभी के लिए एक अधिसूचना बाध्यकारी है। एक विधायी अधिनियमन की शक्तियों के तहत सरकार द्वारा अधिसूचनाएं जारी की जाती हैं। अधिसूचना आम तौर पर कानून के कुछ प्रक्रियात्मक पहलुओं को समझाने के लिए कानून के रूप में काम करते हैं। ऐसी कुछ अधिसूचना जारी की गई हैं जिनके अनुसार वर्णित परिस्थितियों को समझा जा सकता है और भ्रम पैदा कर सकता है।

परिपत्र का प्रारूप एवं उदाहरण :

सं0.....

प्रेषक,
मुख्य सचिव,
उत्तर प्रदेश शासन,
लखनऊ

सेवा में,

उत्तर प्रदेश के समस्त विभागाध्यक्ष, मण्डल-आयुक्त,
जिलाधिकारी और अन्य प्रमुख कार्यालयाध्यक्ष।

लखनऊ, दिनांक.....

महोदय,

विषय : शनिवार को कार्यालय अवकाश

मुझे यह कहने का निर्देश हुआ है कि शासनादेश सं0..... दिनांक..... को रद्द करते हुए, राज्यपाल महोदय की आज्ञा से 1 अप्रैल 2022 से प्रत्येक महीने के प्रथम शनिवार को आधे दिन के अवकाश के बजाय, राज्य सरकार के नियंत्रणाधीन सभी कार्यालय और संस्थाओं में, प्रत्येक महीने के द्वितीय शनिवार को पूर्ण अवकाश रहा होगा।

भवदीय
हस्ताक्षर
( )
मुख्य सचिव

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ प्रेषित-

1.सचिवालय के समस्त अनुभाग
2.विधानसभा सचिवालय
3.विधान परिषद् सचिवालय
4.महालेखाकार, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद
5. राज्यपाल के सचिव
6. मुख्यमंत्री के सचिव

प्रश्न 4 - (क) निम्न शब्दों के उपसर्ग लिखिए:

कुपात्र, प्रत्युपकार , सुसंगठित , अभियान , व्यर्थ

कुपात्र- कु
प्रत्युपकार-प्रति
सुसंगठित-सु
अभियान-अभि
व्यर्थ-वि

(ख) निम्न शब्दों के प्रत्यय लिखिए

दार्शनिक, पीड़ित, खँडहर, लुटेरा, गेरुआ

दार्शनिक-इक
पीड़ित- इत्
खँडहर-हर
लुटेरा-एरा
गेरुआ-उआ

प्रश्न 5 - निम्नांकित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए:

सावधान - विश्राम
सुलभ- दुर्लभ
अक्षर- क्षर
पण्डित- मूर्ख
कुसुम- पाहन ,

वीर- कायर

रथी- अरथी

खंडन- मंडन

अभिमानी- निरभिमानी

मानवता- दानवता

प्रश्न 6 - निम्नाकित वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए :

(i) जिसका उत्तर ने दिया गया हो-अनुत्तरित
(ii) अपने मत को मानने वाला-मतानुयायी
(iii) जो कहा न गया हो-अकथित
(iv) परम्परा से सुना हुआ- अनुश्रावित
(v) जो देखने के योग्य हो- दर्शनीय

प्रश्न 7 - निम्न वाक्यों में अशुद्धियाँ ठीक कीजिये:

(i) इस पुस्तक की यही विशेषता है।
(ii) उसके प्राण पखेरू उड़ गए
(iii) आपकी रचना श्रेष्ठ है
(iv) लड्डू खाकर और लस्सी पीकर हमने यात्रा की
(v) वह नगर द्रष्टव्य है

प्रश्न 8 - निमनलिखित मुहावरों /लोकोक्तियों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए:

(1) नौ नगद न तेरह उधार- उधार की अपेक्षा नगद चीजें बेचना अच्छा
प्रयोग- तुम उससे उधार लेने की बात कर रहे हो वह तो अपने पित को भी उधार मे कुछ नही देता क्योकी उसका मानना है नौ नकद न तेरह उधार

(2) बालू से तेल निकलना- असम्भव कार्य करके दिखाना ।
प्रयोग- बालू से तेल निकालना हर किसी के बस की बात नही है ।

(3) कानी के ब्याह में सौ जोखम- पग – पग पर बाधाएँ
प्रयोग- लोकेश के चुगली करने पर राधा का रिश्ता टूट गया, इस पर रामकलीइ बोली, "बड़ी मुश्किल से रिश्ता हुआ था, सच कहावत है – कानी के ब्याह में सौ जोखम

(4) छतीस का अंक होना- घोर विरोध
प्रयोग – सुधीर और उसके सहकर्मी योगेश में छत्तीस का आँकड़ा है।

(5) खिसियानी बिल्ली खम्भा नोंचे- अपनी किसी बात का क्रोध दुसरो पर निकालना

प्रयोग – यहा आकर क्रोध क्यो कर रहे हो जब तुम्हे सेठ ने पिटा था तब तो कुछ नही बोल सके इसे कहते है खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे।

(6) कालिख पोतना- कलंकित करना

प्रयोग – ओम ने चोरी करके अपने परिवार पर कालिख पोत दी हैं

(7) नौ दो ग्यारहहोना- भाग जाना

प्रयोग – पुलिस के पहूंचने से पहले ही बेंक चौर नौ दो ग्यारह हो गए

(8) अनदेखा चोर शाह बराबर- चोर को चोरी करते न देखने पर वह अपने को निर्दोष व्यक्ति के बराबर समझता है

प्रयोग – चूंकि विनोद की चोरी अभी तक कभी पकड़ी नहीं गयी वह काठ से सीना तान कर रहता है। सच ही कहा है अनदेखा चोर शाह बराबर

(9) करत-करत अभ्यास के जडमति होत सुजान - बार -बार अभ्यास करने से मंद बुद्धि व्यक्ति भी कई नई बातें सीख कर उनका जानकार हो जाता है

प्रयोग – वो पढ़ने में तो कोई ख़ास अच्छा नहीं है लेकिन अपनी जीतोड़ मेहनत से आई ऐ एस बन गया सच ही कहा गया है करत करत अभ्यास ते जड़मति होतसुजान

(10) घोडा घास से यारी करेगा तो खायेगा क्या- मेहनताना या पारिश्रमिक माँगने में संकोच नहीं करना चाहिए

प्रयोग – भाई, मैंने दो महीने काम किया है। संकोच में तनख्वाह न माँगू तो क्या करूँ – 'घोड़ा घास से यारी करेगा तो खायेगा क्या'?